अथवा

'राग दरबारी' में निहित विसंगति, विडंबना और व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

4. 'राग दरबारी' में मौजूद नाटकीयता के तत्व का मूल्यांकन कीजिए। (18)

अथवा

'राग दरबारी' के विभिन्न पात्रों की संवाद शैली, उनके चरित्र और सामाजिक स्थिति को किस तरह परिभाषित करती है, उदाहरण सहित उत्तर लिखिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 7605 **L**

Unique Paper Code : 2053100024

Name of the Paper : Raag Darbari

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSE**

Semester : VIII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **तीन** अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (12×3=36)

(क) हजारों की तादाद में आए हुए ये लड़के स्कूलों, कॉलेजों, यूनिवर्सिटियों को बुरी तरह से घेरे हुए थे। शिक्षा के मैदान में भम्भड मचा हुआ था। अब कोइ यह प्रचार करता हुआ नहीं दीख पड़ता था कि अपढ़ आदमी जानवर की तरह है। बल्कि दबी

जबान से यह कहा जाने लगा था कि ऊंची तालीम उन्हीं को लेनी चाहिए जो उसके लायक हो, इसके लिए 'स्क्रीनिंग' होती चाहिए। इस तरह से घुमा-फिराकर इन देहाती लड़कों को फिर से हल की मूठ पकड़ा कर छोड़ देने की राय दी जा रही थी। पर हर साल फेल होकर, दर्जे में सब तरह की डांट-फटकार झेलकर और खेती की महिमा पर नेताओं के निर्झरपंथी व्याख्यान सुनकर भी वे लड़के हल और कुदाल की दुनिया में वापस जाने को तैयार न थे।

(ख) यह वाद-विवाद खास तौर से साहित्य और कला के क्षेत्र में ही चल रहा था, क्योंकि औरों के मुकाबले वाद-विवाद के लिए साहित्य और कला के क्षेत्र ही ज्यादा-से-ज्यादा फैलावदार और कम-से-कम हानिकारक हैं। पिछली पीढ़ी के मन में अगली पीढ़ी को मूर्ख और अगली के मन में पिछलीं को जोकर समझने का चलन वहां इतना बढ़ गया था कि अगर क्षेत्र साहित्य या कला का ना होता, तो अब तक गृहयुद्ध हो चुका होता। रंगनाथ कुछ दिन तक समझता रहा कि शिवपालगंज में अभी तक ऐसे पीढ़ी-संघर्ष का उदय नहीं हुआ है। पर एक दिन उसका भ्रम दूर हो गया। उसने देख लिया कि यहां भी उसी तरह का संघर्ष है।

(ग) प्रत्येक महापुरुष के इर्द-गिर्द 'पालक-बालकों' का मेला लगा हुआ है। पुरुष जब महापुरुष बन जाता है तो वह अपनी इज्जत अपने 'पात्रक-बालकों' को सौंप देता है। 'पाल्क-बालक' उस

इज्जत को फींचना शुरू करते हैं। कुछ दिन बाद वह हजार धाराओं में फूटकर बहने लगती है। वह लोकसभा और विधानसभा की बहसों को सराबोर करती है, अखबार और रेडियो उसके छींटों से गंधाने लगते हैं, पूरा लोकतंत्र उसमें डूबने-उतराने लगता है, अंत में वह बेहयाई के महासागर में समा जाती है।

(घ) पकने के समय तक खेत में महत्व की एकमात्र चीज पाँधों की कतार-भर रह गई थी। खाद बीज और पानी का कहीं जिक्र ही नहीं हुआ था। इसलिए खेती की यह प्रगतिशीलता आँख को दो महीने सुख देकर किसान के लिए शर्म और जगहँसाई का कारण बन चुकी थी। अब मुआयना करने वाले अफसर लोग भी नहीं आते थे, वे दूसरे प्रकार की कतारों का मुआयना करने के लिए शायद दूसरी ओर निकल गए थे। गेहूं की फसल, जो बैलें ने इतने परिश्रम से पैदा की थी, बैलों को ही अर्पित हो जाने वाली थी।

2. हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा का मूल्यांकन कीजिए। (18)

अथवा

'राग दरबारी' में भारतीय ग्रामीण समाज और राजनीति के यथार्थ चित्र मौजूद हैं- स्पष्ट कीजिए।

3. 'राग दरबारी' की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए। (18)